INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

Level – 1

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

हिंदी (भाषा – 1 & 2)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – I**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – I भर्ती परीक्षा "** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/hs2x82

Online Order करें – https://rb.gy/m9e4br

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

हिंदी (भाषा – ।)

1.	एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण संबंधी प्रश्न : • पर्यायवाची, विलोम, वाक्याशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि । उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अव्यय ।	1
2.	एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रश्न : • रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल, लिंग ज्ञात करना। दिए गए शब्दों का वचन काल और लिंग बदलना ।	74
3.	वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार, पदबंध, मुहावरे और लोकोक्तियाँ, विराम चिह्न।	84
4.	भाषा की शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषा दक्षता का विकास ।	100
5.	भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) हिंदी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठय पुस्तक, बहु- माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन ।	112
6.	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण ।	120

हिंदी (भाषा – II)		
7.	अपठित गद्यांश आधारित निम्नलिखित व्याकरण संबंधी प्रश्न : • युग्म शब्द, वाक्याशों के लिए एक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, काल, शब्द शुद्धि ।	125
8.	अपठित पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रश्न : • भाव सौंदर्य • नाद सौंदर्य • विचार सौंदर्य जीवन दृष्टि • शिल्प सौंदर्य	137
9.	वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के भेद, पदबंध, मुहावरे, लोकोक्तियाँ। कारक चिह्न, अव्यय, विराम चिह्न	
10.	भाषा शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषायी दक्षता का विकास ।	
11.	भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) शिक्षण अधिगम सामग्री - पाठ्य पुस्तक, बहु - माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन ।	
12.	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन । उपचारात्मक शिक्षण ।	

अध्याय – 1

अपठित गद्यांश

गद्यांश – 1

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :-

हम लोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है। हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है। जो साहित्य अपने आपके लिए लिखा जाता है उसकी क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्र्य, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय - निधि है।

- 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है -
  (1) दूसरों से आशा रखना
  (2) पयारा मुख अच्छा लगना
  (3) पराये मुख की अपेक्षा करना
  (4) ईश्वर का मुख
  उत्तर : - (1)
- कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ?
  (1) सेवा (2) भाषा
  (3) प्रयोग (4) हिंदी
  उत्तर :(3)
- इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है
  (1) आशय (2) मतलब
  (3) धन (4) अभिप्राय
  उत्तर : - (3)
- कौनसा शब्द एकवचन हैं ?
  (1) विचारों (2) भाषाओं
  (3) अक्षय (4) मनुष्यों
  उत्तरः - (3)
- कीमत' का बहुवचन है ।
  (1) कीमती (2) कीमतों
  (3) किमतों (4) किम्मत
  उत्तर : - (2)
- 'माध्यम' का बहुवचन है ।
  (1) मध्यमा (2) माध्यमिक
  (3) मध्यम (4) माध्यमों
  उत्तर : - (4)
- 'अक्षय - निधि' का अर्थ है ।
  (1) बिना क्षय रोग
  (2) किसी का नाम
  (3) कभी खत्म न होने वाली सम्पत्ति
  (4) रोग रहित नहीं
  उत्तरः - (3)

गद्यांश – 2

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए:

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुंचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें संदेह नहीं । लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अंधकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जो कि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बनैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद - प्रभृति विभिषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक लीला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटो की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता हमें सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगीनियाँ समूचे देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं । अतः कल्पना के भव्य महलो के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा ।

- वह शब्द बताइए जिसमें संधि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है
  (A) रंगोनियों (B) ध्वंसावशेषों
  (C) अधीरता (D) संप्रदायवाद
  उत्तरः - (B)
- इनमें से वह शब्द बताइए जिसमें समास तथा उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ।
  (A) घात-प्रतिघात (B) भारतवासियों
  (C) कर्मयोगी (D) आत्मनिर्भरता
  उत्तरः - (A)
- वह तत्सम शब्द बताइए जिसके साथ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग है।
  A मानवीय B. मानवता
  C. अधीर D. विखंडित
  उत्तरः- D
- कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण इनमें कौनसा हैं ?
  A. लोमहर्षक B. आत्मनिर्भरता
  C. देशवाशियों D. सर्वाधिक
  उत्तर : -A

- इनमें से कौन सा शब्द तत्सम है ?
(A) स्वतंत्रता (B) श्रद्धा
(C) झोपड़ियाँ (D) आजादी
उत्तर –B

गद्यांश – 3

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए:
आज हमारे सामने अहं सवाल यह है कि धर्म बड़ा या राष्ट्र? उत्तर में यह निर्विवाद तय होना चाहिए कि राष्ट्र बड़ा है। लेकिन साथ ही आस-पास यह भी देखना है कि राष्ट्र की मौलिक अवधारणाएँ क्या हैं ? क्या मिट्टी, पानी, नदी, पहाड़, राजा, प्रजा से ही राष्ट्र की मूर्ति बनती है ? नहीं। राष्ट्र की संपूर्ण छवि और पूरा व्यक्तित्व हजारों वर्षों की मानवीय चेतना, जीवन के शाश्वत मूल्यों और अपने धरती-आकाश में अखण्ड विश्वास से बनता है। आदमी की वैज्ञानिक और मौलिक बुलन्दियों के साथ उसके सफर में और कुछ भी मुलायम सरीखा साथ रहा है। उसको कतरा - कतरा लेकर भी एक बनने की होशियारी सिखाता रहा है। लगता-लम्हा के बीच समय के अरसों को बटोरता रहा है।

- वह शब्द बताइए जिसमें दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ
(A) निर्माण (B)निर्विरोध
(C) निरीक्षक (D)निरकुंश
उत्तर:-(A)

- इनमें से जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा का सही उदाहरण है।
(A) दानव – दानवता (B) सर्व - सर्वस्व
(C) चतुर – चतुराई (D) गीना – गान
उत्तर: - (A)

- 'मौलिक' शब्द किस वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) मूल से मिलाकर बनाया हुआ
(B) मूल, जो किसी की नक़ल न हो
(B) मूल में विश्वास करना
(D) मूल की स्थापना
उत्तर: - (A)

- इनमें से आकाश का सही पर्याय है।
(A) सर (B) वासव
(C) व्योम (D) उत्पल
उत्तर:- (C)

- 'आस – पास' शब्द में कौन – सा समास है ?
(A) द्वंद्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष
उत्तर:- (A)

गद्यांश – 4

निम्न गद्यांश का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों का सही विकल्प चुनिए-
यदि कविता का प्रधान धर्म मनोरंजन और प्रभावोत्पादकता न हो तो-उसका होना निष्फल ही समझना चाहिये। पद्य के काफिये वगैरह की जरूरत है, कविता के लिए नहीं। कविता के लिए तो ये बातें एक प्रकार से उल्टी हानिकारक हैं। तुले हुए शब्दों में कविता करने और तुक, अनुप्रास आदि ढूँढ़ने से कवियों के विचार-स्वातन्त्र्य में बड़ी बाधा आती है। पद्य के नियम कविता के लिए एक प्रकार की बेड़ियाँ हैं। उनसे जकड़ जाने से कवियों को अपनी स्वाभाविक उड़ान में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे। पर काफिये और वजन उसकी स्वाधीनतां में विघ्न डालते हैं। वे उसे अपने भावों को स्वतन्त्रता से प्रकट नहीं करने देते। काफिये और वजन को पहले ढूँढ़कर कवि को अपने मनोभाव तद्नुकूल गढ़ने पड़ते हैं।इसका मतलब यह हुआ कि प्रधानता को अप्रधानता ग्राप्त हो जाती है, और एक बहुत ही गौण बात प्रधानता के आसन पर जा बैठती है। फल यह होता है कि कवि की कविता का असर जाता रहता है।

- निष्फल शब्द में संधि है
(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि
(3) व्यंजन संधि (4) विसर्ग संधि
उत्तर : - (4)
व्याख्या - निष्फल शब्द 'निः+फल' से मिलकर बना है। अतः यहाँ विसर्ग संधि है।

- 'कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे।' रेखांकित पद में कौनसा समास है ?
(1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष
(3) कर्मधारय (4) द्विगु
उत्तर: - (1)
व्याख्या - स्वाधीनतापूर्वक शब्द में अव्ययीभाव समास है।

- "काफ़िये और वजन को पहले ढूँढ़कर कवि को अपने मनोभाव तद्नुकूल गढ़ने पड़ते हैं। " रेखांकित पद है -
(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(2) जातिवाचक संज्ञा
(3) भाववाचक संज्ञा
(4) पुरुषवाचक सर्वनाम
उत्तर : - (2)
व्याख्या - कवि शब्द जातिवाचक संज्ञा है।

- 'विघ्न' शब्द का अर्थ है -
(1) बाधा (2) चुनौती
(3) परिश्रम (4) प्रयास
उत्तर: - (1)

❖ पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं । जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं । हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं । हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

		(अ)
शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड़।
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर ।
अनी	-	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर ।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन ।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग।
अंकुर	-	अँखुआ, कोंपल,कल्ला,नवोद्भिद्।
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल ।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम, परिणाम, नतीजा।
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर।
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना ।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ।
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ
अनल	-	'अग्नि' ।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य ।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत्।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया ।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच।
अपना	-	निज, निजी, व्यक्तिगत ।
अपर्णा	-	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	-	तिरस्कार, अनादर, निरादर ।
अप्सरा	-	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या ।
अबला	-	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	-	निर्भय, निर्भीक, निड़र, साहसी।
अभिप्राय	-	तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।
अँगुली	-	आँगुलिका, अँगुली, उँगली, दधिती, शक्वरी
अँगूठी	-	अंगुली, अंगुलिका, अंगुलीय, छल्ला, छाप, मुँदरी, मुद्रिका
अंकक	-	आमूल्यक, मूल्य–निरूपक, मूल्यांकक, मूल्यांकनकर्ता
अंकुर	-	कलिका, कोपल, नवपल्लव, अँखुआ, अंगुसा ।
अंगभू	-	अंगज, अंगभूत, आत्मज, तनय, धेवता, नंदन नकुल, सुअन, सुता।
अन्तरिक्ष	-	आकाश, उच्चाकाश, खमध्य, महाकाश, महाव्योम ।
अंतर्धान	-	अदृश्य, ओझल, गायब, छूमंतर, तिरोभूत, तिरोहित, लुप्त ।
अंदु	-	घुंघरु, झाँझ, नूपुर, पाजेब, पादांगद, पायल, बंधन, बेडी।
अंधकार	-	तम, तिमिर, अँधियारा, अँधेरा, रात, तमिस्र ।
अंधा	-	चक्षुहीन, दृष्टिहीन, नेत्रहीन
अंश	-	अंग, अवयव, उद्धारण, घटक, चित्रांश, शरीर, सोपान, हिस्सा।
अकड़	-	अनम्य, अंहकार, घमंड, दंभ, दर्प, धृष्टता, हठ ।
अकस्मात्	-	अचानक, एकाएक, सहसा
अकाट्य	-	अखंडनीय,अंदृश्य,अनुल्लंघनीय, अभंज्य, स्वयंसिद्ध ।
अकिंचन	-	दरिद्र, निर्धन, अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, अक्षकीलक, कीली, धुरा, धुरी ।
अक्षत	-	अनुल्लंघित, अभंजित, अविभक्त, कौमार्यवान ।
अक्षय	-	अनंत, अमर, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, सनातन ।
अक्षुण्ण	-	अनष्ट, अभन्जित, अमर, अविकृत, अविभक्त, पवित्र ।
अगाध	-	अमित, असीम, निस्सीम, अतुल, अकूत, अगणनीय ।
अग्नि	-	अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनजंय, पवि, पावक, रोहिताश्व, वहनि, वायुसुख, वैश्वानर, शिखी, समिध, छूतभुक, हुतवहा, हुताशन
अग्राह्य	-	अपाच्य, निषिद्ध, अनाहार्य, अस्वीकार्य
अचिर	-	अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक।
अचल	-	अटल, अडिग, अवहनीय, अविचल, दृढ, निश्चल, स्थावर, स्थिर ।
अच्युत	-	अटल, अनष्ट, अमर, ईश्वर, विष्णु
अजीव	-	अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण
अज्ञ	-	अज्ञानी, नासमझ, मंदधी, मूढ, मुर्ख
अज़	-	दुःख, पीड़ा, मातम, शोक, अबोध
अतिथि	-	अभ्यागत, आगंतुक, आगत, गृहागत, पाहुन, मेहमान ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्र	प्रमेय, प्रक्रम, प्रमाद ।
अभी	अभिमुख, अभिभूत, अभिनव
प्रति	प्रतिवादी, प्रतिघात, प्रतिबन्ध
उप	उपसमिति, उपनेत्र, उपभेद।
अल	अलबिदा, अलबेला अलसुबह ।
ग़ैर	ग़ैर-जरुरी, ग़ैर-हाजिर ।
फ़ी	फ़ी आदमी, फ़ी मैदाना
बद	बदनाम, बदजात ।
परि	परिसर, परिग्रह, परिचय ।
दुस्	दुस्साध्य, दुस्सह, दुस्तर ।
अधि	अधिकरण, अधिकार, अधिक्षेत्र ।
कु	कुकर्म, कुमति, कुचक्र ।
बद	बदअमली, बदकार, बदखत ।

उपसर्ग के कार्य :

(1) शब्द के अर्थ में कोई अंतर नहीं ला पाते ।
(2) शब्द के मूल अर्थ को उलटा कर देते हैं ।
(3) शब्द के मूल अर्थ में एक नवीन विशेषता ला देते है।

उपसर्गों की संख्या – संस्कृत-उपसर्ग (22)

(1) अति – बाहुल्य (अधिक, उस पार)
(2) अधि – सामीप्य, ऊपर, श्रेष्ठ
(3) अनु – पीछे, समान
(4) अप – दूर, हीनता, विरुद्ध
(5) अभी – ओर, सामीप्य
(6) अव – नीचे, हिन
(7) आ – तक, कम, इधर
(8) उत् – उद्- ऊपर, उन्नति
(9) उप – निकट, सहायक, छोटा
(10) दुः दुर्- बुरा, कठिन
(11) दुश्, दुष्, दुस् – बुरा, कठिन
(12) नि – नीचे भीतर
(13) निः निस्- बिना, बाहर, निषेध
(14) निर्- बिना, बाहर, निषेध
(15) परा – पीछे, उलटा, चरम
(16) परि – चारों ओर आस – पास पूर्ण
(17) प्र – अधिक, आगे
(18) प्रति – ओर, उलटा, विरोध, प्रत्येक
(19) वि – बिना, अलग, विशेषता
(20) सम्- पूर्ण, अच्छी तरह, संयोग
(21) अन्- नहीं/बुरा
(22) सु – अच्छा, सुन्दर,सहज

हिंदी उपसर्ग – (10)

(1) अ-अन- रोकना,मना करना
(2) अध-आधे, अपूर्ण
(3) ऊन – एक कम, उजाड़
(4) औं (अव) – मना करना, हिन
(5) दु- हीन, बुरा
(6) नि – अभाव, विशेष, निषेध
(7) बिन – निषेध, अभाव
(8) भर – ठीक, पूरा
(9) कु (क)- बुरा, हीन
(10) सु (स)- श्रेष्ठ, साथ, सुन्दर

उर्द उपसर्ग –(19)

(1) अल (अरबी), निश्चित
(2) ऐन – ठीक, पूरा
(3) कम – थोडा, हिन
(4) खुश – अच्छा,शुभ
(5) ग़ैर – भिन्न, विरुद्ध,
(6) दर – में
(7) ना – अभाव, कम
(8) फ़िल – में, फी (अरबी) में प्रति
(9) ब – अनुसार, में, से ओर
(10) बद – बुरा, अशुभ
(11) बर – ऊपर, पर
(12) बा – साथ,अनुसार
(13) बिल (अरबी)- साथ, से, में
(14) बिला (अरबी)- बिना
(15) बे – बिना, अभाव
(16) ला (अरबी) – बिना, निषेध, अभाव
(17) सर – मुख्य,श्रेष्ठ
(18) हम (संस्कृत संम से) – साथ समान
(19) हर – प्रत्येक

नोट – उर्दू के सारे उपसर्ग अरबी – फारसी से लिए गए हैं ये संख्या में लगभग (19) है ।

❖ प्रत्यय

परिभाषा:-

वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत मे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हे प्रत्यय कहते है। शब्दों में प्रत्यय लगाकर उसी शब्द से विभिन्न अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं, जिनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता। वे जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं, उसके अर्थ को प्रभावित करते है।

प्रत्यय में सन्धि नियम लागू नहीं होता है।

हिन्दी में प्रत्यय दो प्रकार के होते है-

1. **तद्धित प्रत्यय**
2. **कृत/कृदंत प्रत्यय**

1. **तद्धित प्रत्यय** – जो प्रत्यय क्रिया के धातु – रूपों को छोड़कर अन्य शब्दों जैसे – संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते हैं तथा इनसे बने शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं ।

जैसे – बंगाल + ई = बंगाली

यहाँ 'ई' तद्धित प्रत्यय है क्योंकि यह बंगाल नामक संज्ञा के साथ मिलकर नया शब्द 'बंगाली' बना रहा है।

तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते हैं।

1. कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. अप्रत्यय वाचक/संतान बोधक तद्धित प्रत्यय
5. ऊनतावाचक / हीनता / लघुता वाचक तद्धित प्रत्यय
6. स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय

(1) कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द के अंत मे जुड़कर कर्तावाचक शब्द का निर्माण करते है, कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
आरी	पूजा भीख	पुजारी भिखारी
एरा	घास बास ठाठ	घसेरा बसेरा ठठेरा
आरा	बनिज हत्या	बंजारा हत्यारा
आर	लोहा सोना चाम गाँव	लुहार सुनार चमार गंवार
इया	रस दुख छल	रसिया दुखिया छलिया
ई	भेद तेल	भेदी तेली
ची	नकल खजाना तोप	नकलची खजानची तोपची
दानी	पीक मच्छर	पीकदानी मच्छरदानी
दान	खान पीक	खानदान पीकदान
वान/बान	कोच गुण मेज धन	कोचवान गुणवान मेजबान धनवान
कार	संगीत पेश	संगीतकार पेशकार
वाला	काम फल दूध	कामवाला फलवाला दूधवाला
एडी	नशा गाँजा	नशेड़ी गंजेड़ी
ऊ	पेट नाक	पेटू नक्कू
हारा	लकड़ पानी	लकड़हारा पनिहारा
हेत	दंगा बरछा	दंगैत बरछैत

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत मे जुड़कर भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं, भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं ।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
आई	बुरा साफ ठाकुर पंडित	बुराई सफाई ठकुराई पंडिताई
आन	नीचा लंबा घमास	नीचान लंबान घमासान
आ	सर्राफ जोड़	सर्राफा जोड़ा
ई	दलाल सर्द किसान महाजन गृहस्थ चोर	दलाली सर्दी किसानी महाजनी गृहस्थी चोरी
इकी	मानव संस्था	मानविकी संस्थिकी
अक	बंध चिकित्सा लच ठंड़	बंधक चिकित्सक लचक ठंड़क
आवा	चढ़ा बुला दिखा छल	चढ़ावा बुलावा दिखावा छलावा
गी	हकबार जिंदा सादा मर्दान	हकबारगी जिंदगी सादगी मर्दानगी
ता	सुंदर मित्र	सुंदरता मित्रता

	लघु	लघुता
त	रंग चाह	रंगत चाहत
नी	नथ चाँद	नथनी चाँदनी
पन	बाल भोला बांझ छोटा	बालपन भोलापन बांझपन छुटपन
कार	झन जय धिक	झंकार जयकार धिक्कार
आपा	मोटा बूढ़ा	मोटापा बुढ़ापा

(3) संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय -

वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत मे जुड़कर संबंध के अर्थ का बोध कराते हैं, 'संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं ।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
एरा	चाचा काका मामा मौसा	चचेरा ककेरा ममेरा मौसेरा
आला	पानी शिव	पनाला शिवाला
आल	नानी ससुर	ननिहाल ससुराल
जा	भती भान	भतीजा भानजा
आ	प्यास भूख ठंड	प्यासा भूखा ठंडा
आलू	दया कृपा	दयालु कृपालु
इक	व्यवहार व्यवसाय परिश्रम समूह कल्पना	व्यावहारिक व्यावसायिक पारिश्रमिक सामूहिक काल्पनिक
मान	शक्ति शोभा बुद्धि	शक्तिमान शोभायमान बुद्धिमान
कीय	राज नाभ	राजकीय नाभिकीय
शाली	गौरव प्रतिभा शक्ति	गौरवशाली प्रतिभाशाली शक्तिशाली

(4) अप्रत्यय वाचक (संतान वाचक) तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा के अंत में जुड़कर उत्पन्न होने अर्थात् संतान के अर्थ का बोध कराते हैं, संतान बोधक / अप्रत्यय वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं ।

प्रत्यय	मूलशब्द	तद्धितान्त
एय	अंजनी अतिथि पुरुष राधा	आंजनेय आतिथेय पौरुषेय राधेय
आयन	दंड नार कात्य	दंडयायन नारायण कात्यायन
अ	यदु दनु अदिति	यादव दानव आदित्य
इ	वाल्मीक दशरथ	वाल्मीकि दशरथी
य	पुलस्ति चतुर्मास	पौलस्त्य चातुर्मास्य
आमह	पितृ मातृ	पितामह मातामह
ई	पर्वत गांधार	पार्वती गांधारी

(5) ऊनतावाचक / लघुतावाचक / हीनतावाचक तद्धित प्रत्यय- वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा शब्दों के साथ जुड़कर उनके छोटे/लघु रूप का बोध कराते है, ऊनतावाचक / लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय	मूलशब्द	तद्धितान्त
इया	बिंदी खाट लाठा	बिंदिया खटिया लठिया
ई	रस्सा प्याला हथोड़ा थाल	रस्सी प्याली हथोड़ी थाली
आ	लालू कालू	लालुआ कलुआ
री	कोठा मोट बांस	कोठारी मोटरी बाँसुरी
ली	खाज ढ़प टीका	खुजली ढ़पली टिकली
डी	टांग	टँगड़ी
	पंख आंत	पंखड़ी आंतड़ी

मनः + हर = मनोहर (कृष्ण)
मनः + रथ = मनोरथ (इच्छा, चाह)
मनः + बल = मनोबल
मनः + विकार = मनोविकार
तमः + गुण = तमोगुण
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

नियम (3)- यदि विसर्ग के बाद च्, छ आए तो विसर्ग के स्थान पर श्, यदि ट्, ठ आए तो विसर्ग के स्थान पर ष और यदि त्, थ् आए तो विसर्ग के स्थान पर स हो जाता हैं।

जैसे - निः + चल = निश्चल
नमः + ते = नमस्ते
धनु + टंकार = घनुटंकार
मरुः + थल = मरुस्थल
हरिः + चन्द्र = हरिश्चन्द्र
निः + तेज = निस्तेज
निः + छल = निश्छल

नियम (4)- यदि विसर्ग के बाद र् वर्ण आए तो विसर्ग से पहले लघु मात्रा को दीर्घ मात्रा में बदल देते हैं तथा विसर्ग का लोप हो जाता है।

निः + रस = नीरस
निः + रोग = नीरोग
निः+ रव = नीरव (शान्त, एकान्त,सूनापन,जनरहित स्थान)
दुः + राज = दूराज

❖ समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात् समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।

जैसेः- गंगाजल -

गंगा	जल	गंगा जल	गंगा का जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद)	(समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं
समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. अव्ययीभाव समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

(तत्पुरुष समास के भेद)

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव
(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु
(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व
(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोटः

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।
अर्थात् ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं। जैसे –यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति, जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

भुखमरा	-	भूख से मरा हुआ
रोगग्रस्त	-	रोग से ग्रस्त
हस्ताक्षरित	-	हस्त द्वारा अक्षरित
शोकातुर	-	शोक से आतुर
मनगढ़ंत	-	मन से गढ़ी हुई
वाक युद्ध	-	वाक से युद्ध
सुख युक्त	-	सुख से युक्त
मदशुन्य	-	मद से शून्य
दुखसंतप्त	-	दुःख से संतप्त
मनमौजी	-	मन से मौजी
भयभीत	-	भय से भीत
आनन्द उत्सव	-	आनन्द से भरा उत्सव
गुरुदत	-	गुरु द्वारा दत
कष्टसाध्य	-	कष्ट से साध्य
रामलीला	-	राम द्वारा रचित लीला
तैलोक्त	-	तेल से युक्त
अनुराग अंचल	-	अनुराग से भरा अंचल

नोट -स्वयंवर शब्द में 'के' कारक चिह्न से विभक्ति नहीं निकालेंगे, क्योंकि यहाँ 'के' सम्बन्ध नही दर्शाता है। यहाँ 'द्वारा' शब्द अथवा कारक चिह्न से विभक्ति निकालेंगे।

समस्त पद	-	**विग्रह**
स्वयंवर	-	स्वयं के द्वारा वर चुनना
आशाभरी	-	आशा से भरी
दिग्भ्रमित	-	दिक से भ्रमित
व्यंग्य मुस्कान	-	व्यंग्य से युक्त मुस्कान
दर्द भरा	-	दर्द से भरा
यूथ भ्रष्ट	-	यूथ (झुंड) से भ्रष्ट
आत्मनिवेदन	-	आत्मा से निवेदन
आनन्दनृत्य	-	आनन्द से भरा नृत्य
लापरवाही भरी	-	लापरवाही से भरी
सनक भरी	-	सनक से भरी

[III] संप्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थ तत्पुरुष):-
जहाँ समास के पूर्व पक्ष में संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है, वहाँ संप्रदान तत्पुरुष समास है। जैसे

समस्त पद		**विग्रह**
प्रयोगशाला	-	प्रयोग के लिए शाला
स्नानघर	-	स्नान के लिए घर
यज्ञशाला	-	यज्ञ के लिए शाला
गौशाला	-	गौ के लिए शाला
देशभक्ति	-	देश के लिए भक्ति
डाकगाड़ी	-	डाक के लिए गाड़ी
परीक्षा भवन	-	परीक्षा के लिए भवन
हथकड़ी	-	हाथ के लिए कड़ी
कृष्णार्पण	-	कृष्ण के लिए अर्पण

हवन सामग्री	-	हवन के लिए सामग्री
सभा भवन	-	सभा के लिए भवन
युद्धभूमि	-	युद्ध के लिए भूमि
गुरुदक्षिणा	-	गुरु के लिए दक्षिणा
रणनिमंत्रण	-	रण के लिए निमंत्रण
सत्याग्रह	-	सत्य के लिए आग्रह
क्रीडाक्षेत्र	-	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
रसोईघर	-	रसोई के लिए घर
राहखर्च	-	राह (रास्ते) के लिए खर्च
देशार्पण	-	देश के लिए अर्पण
मालगोदाम	-	माल के लिए गोदाम
पितृदान	-	पितृ के लिए दान
युद्धाभ्यास	-	युद्ध के लिए अभ्यास
परीक्षाकेंद्र	-	परीक्षा के लिए केन्द्र
आरामकुर्सी	-	आराम के लिए कुर्सी
देवबलि	-	देव के लिए बलि
राज्यलिप्सा	-	राज्य के लिए लिप्सा
पाठशाला	-	पाठ के लिए शाला
वासस्थान	-	वास के लिए स्थान
मवेशीखाना	-	मवेशियों के लिए जगह
टूथपेस्ट	-	टूथ (दाँत) के लिए पेस्ट
रासलीला	-	रास के लिए लीला
छात्रावास	-	छात्रों के लिए आवास
आनन्दभवन	-	आनन्द के लिए भवन
जेबखर्च	-	जेब के लिए खर्च
विद्यापीठ	-	विद्या के लिए पीठ
शान्तिनिकेतन	-	शान्ति के लिए निकेतन
प्रचारगाड़ी	-	प्रचार के लिए गाड़ी
अतिथिशाला	-	अतिथि के लिए शाला
मृत्युदंड	-	मृत्यु के लिए दिया जाने वाला दंड
विश्रामस्थल	-	विश्राम के लिए स्थल
बलि पशु	-	बलि के लिए पशु

[IV] अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने के भाव में) लुप्त हो जाती है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है जैसे -

नोटः- हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद		**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन

17. **इतिश्री/समाप्ति चिह्न &0& & &**

किसी अध्याय या ग्रंथ की समाप्ति पर इस चिह्न काप्रयोग किया जाता है।

18. **विकल्प चिह्न /**

जब दो में से किसी एक को चुनने का विकल्प हो।
जैसे- शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है कवयित्री/कवियत्री या दोनों शब्द समानार्थी है जैसे जो सदा रहने वाला है। शाश्वत / सनातन / नित्य

19. **पुनरुक्ति चिह्न " "**

जब ऊपर लिखी किसी बात को ज्यों का त्यों नीचे लिखना हो तो उसके नीचे पुनः वही न लिखकर इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।
जैसे-
अल्प विराम
अर्द्ध " "
अपूर्ण " "
पूर्ण " "

अध्याय – 4

भाषा शिक्षण, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषायी दक्षता का विकास

शिक्षण विधियाँ :-

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसका क्रियान्वयन पूर्व में निर्धारित उद्देश्यों को पाने के लिए किया जाता है। शिक्षक पूर्व में निर्धारित किए गए उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए व अपनी विषय - वस्तु की प्रदर्शन को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है।

इस प्रकार शिक्षण विधियाँ शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को शक्तिशाली बनाने वाले साधन है- जॉन डीवी के अनुसार "शिक्षण पद्धति वह विधि है जिसके द्वारा इस पठन सामग्री को व्यवस्थित करके परिणाम को प्राप्त करते है । '

वेंस्ले ने कहा की "शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को बोध व ज्ञान की प्राप्ति होती है । "

शिक्षण के संदर्भ में डेविस के कथन भी महत्वपूर्ण है- "विद्यार्थियों के कक्ष में जाने से पहले तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि शिक्षक की समृद्धि हेतु कोई बात इतनी बाधक नहीं है जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी । "

एलन जैक्सन – एक शिक्षक को अपने जिम्मेदारी को निभाने हेतु विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियों को अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर सम्पन्न करनी होती है इन गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए विधिवत नियोजन तथा कार्यान्वयन सम्बन्धी उचित प्रक्रियों से गुजरना होता है । यह सब करने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को कुछ निश्चित सोपानों या अवस्थाओं में व्यवस्थित करके आगे बढ़ाना होता है ।

शिक्षण की एलन जैक्सन ने निम्न तीन अवस्थाएँ बताई है
1. शिक्षण पूर्व अवस्था - तैयारी या नियोजन की अवस्था
2. शिक्षणगत अवस्था- क्रियान्वयन या शिक्षण की अवस्था
3. शिक्षण उपरान्त अवस्था- पूनरावृत्ति या मूल्यांकन की अवस्था

भाषा शिक्षण की विधियाँ

भाषा शिक्षण एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण क्रिया है लेकिन उसके साथ – साथ यह आनंददायी क्रिया भी है। भाषा सीखने के मनोवैज्ञानिक चरण इस प्रकार है -
1. जिज्ञासा
2. प्रयत्न या तत्परता
3. अनुकरण
4. अभ्यास

शिक्षण में 'विधियाँ' शब्द का उपयोग पढ़ाने की उन प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है जिनकी सफलतापूर्ण समाप्ति के परिणामस्वरूप विद्यार्थी कुछ सीखता है या

जिनके कारण शिक्षण प्रभावशाली होता है। 'विधियाँ शिक्षक की अनेकों प्रक्रियाओं का एक समूह है। 'विधियाँ क्रिया नहीं एक प्रक्रिया है ।

श्रीमती एस. के. कोचर ने अपनी पुस्तक 'मेथड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग' में शिक्षण- विधियों के महत्व की अत्यन्त उत्तम व्याख्या की है । वे अपने लेखन में लिखती हैं," जिस प्रकार एक सैनिक को युद्ध के विभिन्न हथियारों का ज्ञान होना आवश्यक है उसी प्रकार एक शिक्षक को भी शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है । किस समय कौन सी विधि का प्रयोग किया जाए, यह उनकी निर्णय शक्ति पर निर्भर है। "इस प्रकार शिक्षण में शिक्षण विधियों का अत्यधिक महत्व है शिक्षण विधियों का ज्ञान सभी शिक्षकों को होना आवश्यक है। शिक्षण विधियों शिक्षा के उद्देश्यों तथा मूल्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है और शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होती है ।

उत्तम शिक्षण विधि की विशेषताएँ

शिक्षण - कला में उपयोग में लायी जाने वाली उत्तम विधि में निम्न विशेषताएँ होती हैं -

- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थी को विषय - वस्तु के प्रति प्रेरित करे ।
- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थियों को शिक्षा का सक्रिय सदस्य बनाए। विधियों में आवश्यक स्थानों पर विद्यार्थी द्वारा सम्पादन करने के लिए पर्याप्त क्रियाओं का होना आवश्यक है।
- विधियाँ सुनिश्चित एवं उपयोग करने योग्य हो ।
- उत्तम विधियाँ कलात्मक व व्यक्तिगत होती हैं। वे शिक्षक को वांछित एवं अवांछित का ज्ञान कराती हैं ।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में वांछित बदलाव लाती हैं और उनमें अच्छी आदतों एवं बातों का निर्माण करती हैं ।
- उत्तम-शिक्षण विधियाँ वे हैं जो पूर्व - निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो । शिक्षण विधि, शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होनी चाहिए।
- शिक्षण विधि छात्रों में वैज्ञानिक परिपेक्ष्य उत्पन्न करने वाली तथा वैज्ञानिक विधि से कार्य करने का प्रशिक्षण देने वाली हो ।
- शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का पालन करने वाली हो अर्थात् छात्र की योग्यता, स्तर,, रुचि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हो ।
- सजीव वातावरण बनाने में सहायता करता हो जो विद्यार्थियों को अन्त : क्रिया के अधिकतम अवसर देने वाली व उत्साहवर्धन वाली हो ।
- करके सीखने के सिद्धान्त अर्थात् क्रियाशीलता पर आधारित होनी चाहिए।
- कम से कम समय लेने वाली तथा प्रभावी हो ।
- शिक्षण विधि में व्यावहारिकता होनी चाहिए अर्थात् उसे सरलता से उपयोग में लिया जा सके। शिक्षण विधि को गतिशीलपूर्ण होना चाहिए न कि स्थिर ।
- वह विद्यार्थियों में मानसिक गुणों के साथ - साथ शारीरिक, सामाजिक व संवेगात्मक गुणों का विकास करने वाली अर्थात् सर्वांगीण विकास के अवसर देनी वाली हो ।
- विधि शिक्षण सहायक सामग्रियों के माध्यम से सरल व स्पष्टता लाने वाली हो जिससे शिक्षक व विद्यार्थी दोनों ईमानदारी व आत्मविश्वास से शिक्षण प्रक्रिया में भाग लें तथा यह विद्यार्थियों को रटने से विधियाँ ऐसी हों करने वाली हो ।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में मानसिक तर्क, निर्णय तथा विश्लेषण-शक्ति का विकास करती हैं तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पूर्ण मान्यता प्रदान करती हैं।

अनुकरण विधि

सामान्यतः अनुकरण विधि का प्रयोग लिखित अनुकरण, उच्चारण अनुकरण एवं रचना अनुकरण के रूप में किया जाता है ।

- **लिखित अनुकरण :-** जब छात्र के द्वारा शिक्षक के द्वारा लिखित कार्यों का अनुकरण किया जाता है, उसे लिखित अनुकरण कहा जाता है, जिसके निम्न प्रकार हैं :

  1. रूप-रेखा अनुकरण :- इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा अक्षरों व वर्णों को लिखा जाता है, जिनका अनुकरण करते हुए छात्र उन्हीं आकृतियों पर पेन, पेंसिल घुमाता है । इसके लिए मुद्रित अभ्यास पुस्तिकाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है ।

  2. स्वतंत्र अनुकरण :- इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा श्यामपट्ट या अभ्यास पुस्तिका पर अक्षर लिखे जाते हैं जिनको वैसा ही अनुकरण या लिखने को छात्र से कहा जाता है ।

- **उच्चारण अनुकरण :-** इसके अन्तर्गत शिक्षक ध्वनिपूर्ण या मौखिक रूप से कुछ शब्दों का उच्चारण करता है, जिनका अनुकरण करते हुए छात्र भी वैसा ही उच्चारण करता है।
- **रचना अनुकरण :-** इसके अन्तर्गत रचना को जिस भाषा व शैली में प्रस्तुत (नाटक, पद्य व गद्य) करते हैं, छात्र उस रचना पर आधारित रचनाओं का अनुकरण (नकल) करता है। प्राथमिक स्तर पर रचना शिक्षण के लिए चित्र निर्माण पर बल देना चाहिए। निबंध रचना के कलात्मक पक्ष के अन्तर्गत शब्दावली भाषा व वाक्य रचना का विशेष महत्व होता है किसी रचना के विषय में स्वतंत्र राय व आत्म विश्वास उत्पन्न करने के लिए भाषा व साहित्य का होना आवश्यक है।

ध्वन्यात्मक विधि:

- भाषा विज्ञान में सबसे पहले एवं सर्वाधिक ध्यान तथा बल ध्वनि विज्ञान पर ही दिया जाता है ।
- इसमें अर्थ की अपेक्षा ध्वनि पर ही अधिक बल डाला जाता है।
- इस पद्धति के अनुसार नवीन भाषा का सुनना तथा उसका अनुकरण करके बोलना सबसे अधिक आवश्यक है। किसी भी भाषा की ध्वनियों पर अधिकार प्राप्त कर लेने से उसका बोलना तथा लिखना सरल हो जाता है ।

अनुवाद विधि :

अनुवाद एक भाषा या भाषा भेद द्वारा अभिहित कथ्य को दूसरी भाषा या भाषा भेद में रूपांतरित करने की प्रक्रिया है। इस विधि में भाषा तो बदल जाती है, किंतु अर्थ के स्तर पर दोनों भाषाओं के कथ्य में समानता जरूरी है । अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है और इसके लिए अनुवादक को स्रोत भाषा (आधार भाषा) व लक्ष्य भाषा (सीखे जाने वाली भाषा) के हर, स्तर की बारीकियों से परिचित होना चाहिए। इसके लिए उसे भाषा विज्ञान की अच्छी जानकारी होनी चाहिए ।

अनुवाद की एक निश्चित प्रक्रिया होती है, जिसके तीन चरण होते हैं - (i) पठन तथा पाठ - विश्लेषण (ii) संक्रमण, पुनर्गठन तथा (iii) लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति ।

हिन्दी शिक्षण की विधियाँ

शिक्षण की दृष्टि से हिन्दी भाषा के क्षेत्र को निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है

1. गद्य शिक्षण
2. पद्य शिक्षण
3. व्याकरण शिक्षण

गद्य शिक्षण:

'गद्य' शब्द संस्कृत के 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है- स्पष्ट कहना। गद्य में भाव को सरल विधि से स्पष्ट किया जाता है। गद्य को व्याकरणिक नियमों से पूर्ण रचना के रूप में देखा जाता है।

हिंदी में मुख्य गद्य विधाएँ इस प्रकार हैं –

1. निबंध 2. नाटक 3. कहानी 4. उपन्यास 5 एकांकी 6. जीवनी 7. आत्मकथा 8. संस्मरण 9. रेखाचित्र 10. रिपोर्ताज 11. डायरी 12. पत्र आदि ।

भाषा शिक्षण के अंतर्गत गद्य शिक्षण के उद्देश

शिक्षण विधियों के चयन में उद्देश्य की भूमिका सर्वोपरि होती हैं । गद्य शिक्षण के उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया जाता है -

1. सामान्य उद्देश्य 2. विशिष्ट उद्देश्य

गद्य शिक्षण के सामान्य उद्देश्य:

- भाषा सम्बन्धी ज्ञान की अभिवृद्धि करना तथा भाव व्यक्त करने की नवीन शैलियों से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों के शब्द - भंडार तथा सूक्ति-भंडार को बढ़ाना है ।
- विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति (याद रखने की क्षमता) व सृजन-शक्ति (कलात्मक – शक्ति) का विकास करना ।
- विद्यार्थियों के शब्दों के उच्चारण को शुद्ध करना तथा शुद्ध शब्द व शुद्ध वाक्यादि का ज्ञान ।
- विद्यार्थियों में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना ।
- विद्यार्थियों की मानसिक, तार्किक एवं बौद्धिक शक्तियों में विकास करना ।
- पाठगत सुन्दर भावों तथा विचारों द्वारा चरित्र निर्माण में योग देना।
- विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों का बोध कराना ।
- विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच को विकसित करना ।
- विद्यार्थियों में सृजनशीलता व रचनात्मकता का विकास करना ।

गद्य शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य:

गद्य पाठ विशेष के अध्यापन के विशिष्ट उद्देश्य पाठ में निहित मुख्य भाव या कलात्मक विशेषता पर आधारित होते हैं। विद्यार्थियों में इन्हीं को समझने की क्षमता उत्पन्न करना इस विशेष गद्य पाठ का उद्देश्य होता है

गद्य- शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों को अधोलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है -

1. ज्ञान 2. अवबोध 3. ज्ञानोपयोग 4. अभिरुचि 5. अभिवृत्ति 6. कौशल

- **ज्ञान -** इसके अन्तर्गत उन सभी नई बातों की जानकारी आती है जो उस पढ़ाए जाने वाले पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाई जाती है। ज्ञान के निम्न प्रकार है
  (अ) भाषा तत्वों का ज्ञान
  (ब) विषय-वस्तु का ज्ञान
  (स) रचना रूपों का ज्ञान
- **अवबोध** - यह समझ पाना कि किसी शब्द का उपयोग कहाँ - कहाँ और किन - किन परिस्थितियों में किया जा सकता है तथा शब्दों का अन्तर स्थापित करने की क्षमता उत्पन्न करना । तुलनात्मकता का ज्ञान इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है ।
- **ज्ञानापयोग**- प्राप्त ज्ञान का सम्बन्ध चाहे वह भाषा तत्वों से हो या विषय वस्तु से उसका विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग करना ज्ञानोपयोग के अन्तर्गत आता है ।
- **अभिरुचि**- पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु या भाषा तत्वों के ज्ञान में रुचि के लिए बदलती हुई विधियों और क्रियाओं का प्रयोग करना, जैसे बच्चों के अशुद्ध उच्चारण को शिक्षक द्वारा कभी विद्यार्थियों से और कभी बोलकर व लिखकर शुद्ध करना चाहिए जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों की पाठ के प्रति रुचि उत्पन्न होगी ।
- **अभिवृत्ति**- पाठ को पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थियों के मन पर उस पाठ को पढ़ने का जो प्रभाव पड़ता है, उसे मनोवृत्ति या अभिवृत्ति कहते हैं।
- **कौशल**- जब कोई बात अपने शब्दों में इस प्रकार कही जाती है कि उसे दूसरे लोग सुनकर या पढ़कर प्रभावित हो जाएँ तो वह कौशल है, जैसे छात्र में नवीन शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं यथा स्थान प्रयोग करने का कौशल उत्पन्न करना तथा भावानुकूल वाचन का कौशल उत्पन्न करने का प्रयास करना ।

- 'यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया, अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया ।' यहाँ कैकेयी के मन में जाग्रत भाव
  (1) ईर्ष्या (2) द्वेष
  (3) पश्चाताप (4) विवशता है
  उत्तर : - (3)
  व्याख्या- यहां कैकेयी ने स्वयं को अपराधिन कहा है तथा वह अपने कर्मों पर पश्चाताप व्यक्त कर रही है। अतः कैकेयी के मन में पश्चाताप का भाव जाग्रत हुआ है।

- 'तुषारावृत्त' शब्द में कौनसी संधि है?
  (1) दीर्घ (2) गुण
  (3) व्यंजन (4)विसर्ग
  उत्तरः - (1)
  व्याख्या- तुषरावृत्त-तुषार+आवृत्त (दीर्घ संधि)
  यहाँ अ+आ के योग से 'आ' स्वर बना है।

- 'चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी- स्वर को ।' यहाँ व्यक्त भाव है
  (1)हर्ष (2) विस्मय
  (3) उत्साह (4) उन्माद
  उत्तरः - (2)
  व्याख्या- यहाँ 'चौंके' शब्द प्रयुक्त होने से ज्ञात होता है कि यहाँ विस्मय का भाव व्यक्त हुआ है ।

- 'वह सिंही अब थी हहा! गौमुखी गंगा।' पंक्ति में व्यक्त काव्य सौन्दर्य है -
  (1) बिम्ब योजना (2) भाव संधि
  (3) प्रतीकात्मकता (4) उक्त सभी
  उत्तरः - (4)
  व्याख्या - बिम्ब योजना - बिम्ब शब्द का अर्थ है - मूर्त रूप प्रदान करना । शब्दों के माध्यम से निर्मित चित्र ही बिम्ब कहलाता है।
  बिम्ब किसी वस्तु का वास्तविक चित्र न होकर कल्पना द्वारा निर्मित मानसिक चित्र होता है। यहाँ पंक्ति को पढ़ने या सुनने के बाद हमारे मानस पटल पर ये घटनाएँ घटित होती-सी जान पड़ती है ।
  भाव संधि- जहाँ समान चमत्कार वाले दो भावों का वर्णन एक साथ किया जाता है, वहाँ भाव संधि होती है। यहाँ 'विषाद' एवं 'निर्वेद' दो भाव एक साथ प्रयुक्त हुए हैं।
  प्रतीक योजना- प्रतीक का सामान्य अर्थ संकेत या चिह्न है। प्रतीक का प्रयोग किसी अन्य के स्थान पर किया जाता है। यहाँ कैकेयी के लिए 'सिंही' एवं 'गौमुखी गंगा' प्रतीक प्रयुक्त हुए हैं।

- कवि ने कमजोर - निर्दोष के लिए अपना सत्य स्थापित करने का विशेष साधन किसे कहा है ?
  (1) शपथ (2) शक्ति
  (3) समर्थन (4) परीक्षा
  उत्तर : - (1)
  व्याख्या- 'कवि ने कमजोर-निर्दोष के लिए अपना सत्य स्थापित करने का विशेष साधन शपथ को माना है।

- 'विधुलेखा' का अर्थ है -
  (1) विधवा (2) सधवा
  (3) चाँदनी (4) चाँद
  उत्तरः - (3)
  व्याख्या- 'विधुलेखा' का अर्थ 'चाँदनी' होता है।
  विधवा- जिसका पति मर चुका हो।
  सधवा- जिसका पति जीवित हो। चाँद- चाँद को विधु भी कहते हैं।

पद्यांश – 2

कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्न प्रश्नों में उत्तर का सबसे उचित विकल्प चुनिए -

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको, जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसीवाली रानी थी ।।

- उक्त रचना में कौनसा काव्य गुण है ?
  (1) ओज (2) प्रसाद
  (3) माधुर्य (4) उक्त कोई नहीं
  उत्तर- (1)
  व्याख्या- जिस काव्य को पढ़ने से या सुनने से हृदय में उमंग और उत्साह का संचार होता है, वहाँ ओज गुण का विधान होता है। ओज गुण से युक्त रचना में संयुक्त वर्णों की प्रधानता रहती है तथा 'र, ट, ठ, ड, ढ, ण' वर्णों की भी प्रधानता रहती है। इस कविता में संयुक्त वर्णों के साथ-साथ 'र' वर्ण की भी प्रचुरता है।

- 'मिला <u>तेज से तेज</u>, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी ।' उक्त पंक्ति में रेखांकित पद में प्रयुक्त अलंकार हैं
  (1) पुनरुक्ति प्रकाश (2) यमक
  (3) रूपक (4) उक्त कोई नहीं
  उत्तरः - (1)
  व्याख्या- जहाँ अर्थ में रोचकता लाने या अर्थ को और अधिक परिपुष्ट करने के लिए काव्य में किसी शब्द को दोहराया जाता है, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का विधान होता है। यहाँ इस पंक्ति में 'तेज' शब्द को दोहराया गया है।

- 'दिव्य' शब्द का भावार्थ है
  (1) पवित्र (2) अलौकिक
  (3) वास्तविक (4) प्रेरक
  उत्तरः- (2)
  व्याख्या- 'दिव्य' शब्द का अर्थ 'अलौकिक' होता है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/ZgzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/hs2x82 1 web.- https://rb.gy/m9e4br

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO